Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2022, VOL- 10/74

वृद्धजनों की मनो–सामाजिक समस्यायें (वर्तमान परिदृश्य)

सहदेव सिंह[1] एवं नीतू[2], **Ph. D.**

[1](शोध छात्र) नारायण कॉलेज शिकोहाबाद (सम्बद्ध– डॉ भीमराव अ0 वि0 वि0 आगरा)

[2]ऐसोशिएट प्रो0 समाजशास्त्र नारायण कॉलेज शिकोहाबाद(सम्बद्ध– डॉ भीमराव अ0 वि0वि0 आगरा)

Paper Received On: 25 DECEMBER 2022

Peer Reviewed On: 31 DECEMBER 2022

Published On: 01 JANUARY 2023

Abstract

वृद्धावस्था मानव जीवन एक गम्भीर, जटिल एवं सार्वभौमिक समस्या है। तीव्र परिवर्तनों के वर्तमान दौर में परिवार की संरचना एवं प्रकार्यो में हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवार अनाथों, विधवाओं, विधुरों तथा वृद्धों की सहायता एवं सुरक्षा देने का कार्य पूर्व की भाँति नहीं कर पा रहा है। यही कारण है कि आज वृद्धों और परिवार के बीच सफल समायोजन नहीं हो पा रहा है और वृद्धों का पारिवारिक जीवन समस्याग्रस्त हो रहा है। आज की दुनियाँ में वृद्धों को फालतू वस्तु समझने की प्रवृत्ति बढती ही जा रही है, इसलिए वृद्ध लोग वृद्धावस्था से घबराने लगे हैं। वैदिक काल में चार आश्रमों में मनुष्य की आयु को विभक्त किया गया था। प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में 25 वर्ष, द्वितीय गृहस्थ आश्रम 25 से 50 वर्ष तृतीय वानप्रस्थ आश्रम 50 से 75 वर्ष तथा चतुर्थ सन्यास आश्रम 75 से 100 वर्ष तक। इस प्रकार मनुष्य की उम्र 100 वर्ष मानी जाती थी, इस काल में मनुष्य तृतीय एवं चतुर्थ आश्रम में वरिष्ठता को प्राप्त करता था वृद्ध व्यक्ति समाज को अपने अनुभवों, सुझावों एवं विचारों से परिपूर्ण कर सकता है। उनके संस्कार, सदाचार तथा प्रत्येक कार्य सकारात्मक व शान्तिप्रिय माने जाते थे। समाज में वृद्धों को जो मान– सम्मान और प्रस्थिति प्राप्त थी, अब वो धीरे–धीरे खत्म होने लगी है। एकल परिवार की बढती प्राथमिकता से पारिवारिक दायरे में बुजुर्ग धीरे–धीरे उपेक्षित होते जा रहे हैं। उनकी सुख–सुविधाओं का खयाल रखना तो दूर की बात है, लोगों के लिए वे भार लगने लगे हैं। इसका एक मुख्य कारण, वर्तमाान पीढ़ी की मोबाइल फोन पर बढ़ती हुई निर्भरता भी है। वर्तमाान में वृद्धजनों से सलाह लेने के स्थान पर, गूगल पर समाधान ढूँढ़ने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

शब्दावली : वृद्धावस्था, वृद्धाश्रम, प्रस्थिति, मनोसामाजिक

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्ररचनाः प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने के लिए अध्ययन समस्या की प्रकृति, अध्ययन के महत्व एवं उद्देश्यों के अनुरूप ''विश्लेषणत्मक'' (Analytical) शोध प्ररचना को चुना गया है; क्योंकि इस शोध प्ररचना का

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मौलिक उद्देश्य अध्ययन समस्या से सम्बन्धित प्राप्त मौलिक जानकारी तथा प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर शोध अध्ययन का तार्किक विश्लेषण करना है।

विश्लेषण एवं निष्कर्षः

तालिका 1 : वृद्धजनों की मनो–सामाजिक समस्यायें

क्रम	सम्बन्धित प्रश्न जो जानकारी प्राप्त करने के लिए वृद्धजनों से किए गए	वृद्धजनों की स्वीकारोक्तियाँ/अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)				योग (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	क्या वृद्ध हो जाने पर आपकी आदतों में कोई अन्तर आया है ?	120 (40.00)	162 (54.00)	18 (06.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
2	क्या आप इस अवस्था में खान–पान के सम्बन्ध में समस्या की अनुभूति करते हैं ?	168 (56.00)	69 (23.00)	54 (18.00)	09 (03.00)	300 (100.00)
3	क्या आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासन सम्बन्धी समस्या की अनुभूति करते हैं ?	183 (61.00)	45 (15.00)	69 (23.00)	03 (01.00)	300 (100.00)
4	क्या आप सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं ?	243 (81.00)	-- (00.00)	57 (19.00)	-- (00.00)	300 (100.00)
5	क्या आप कभी संवेगात्मक भावनाओं के शिकार तो नहीं हो जाते ?	150 (50.00)	60 (22.00)	78 (26.00)	06 (02.00)	300 (100.00)
6	क्या आपके आत्म सम्मान सम्बन्धी सोच में कोई फर्क तो नहीं आया है ?	-- (00.00)	288 (96.00)	12 (04.00)	-- (00.00)	300 (100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़े प्रतिशतता दर्शाते हैं)

प्रस्तुत तालिका के अन्तर्गत भिन्न पहलुओं के सन्दर्भ में प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि–

(1) 40 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वृद्ध हो जाने पर उनकी पुरानी आदतों में अन्तर/परिवर्तन हो गया है जबकि वयोवृद्ध/रिटायर हो गए हैं इसलिए वे सार्वजनिक जीवन में मनो–सामाजिक समस्याओं की अनुभूतियाँ करते हैं।

(2) 56 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वे इस अवस्था में खान–पान समय पर न मिल पाने सम्बन्धी समस्याओं की अनुभूति करते हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(3) 61 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं ने यह स्वीकारोक्तियाँ की हैं कि वे अपने दैनिक जीवन में अनुशासन सम्बन्धी समस्या की अनुभूतियाँ करते हैं क्योंकि परिजन न तो उनकी बात ही मानते हैं और न अनुशासन में ही रहते हैं; और न ही उनके जीवन के अनुभवों का ही लाभ ही लेना चाहते हैं।

(4) 81 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाता परिवार तथा समुदाय के व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का अनुभव करते हैं क्योंकि वे पुराने विचारों के हैं।

(5) 50 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वे कभी–कभी परिजनों तथा समुदाय के लोगों के साथ संवेगात्मक भावनाओं के शिकार हो जाते हैं, लेकिन वृद्ध हो जाने की बजह से फिर भी संयम व धैर्य बरतते हैं।

(6) 96 प्रतिशत वृद्ध सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि उनके आत्म सम्मान सम्बन्धी सोच में बदलाव आया है; ऐसी अनुभूतियाँ वे करते हैं कि लोग उनका उतना सम्मान नहीं करते जितना कि उन्हें करना चाहिए। इस तथ्य की पुष्टि **सिंह भारत[4] (2009)** के 250 ग्रामीण वयोवृद्ध सूचनादाताओं पर आधारित आनुभविक अध्ययन से भी होती है।

उपरोक्त आनुभविक तथ्यों के विश्लेषण के प्रकाश में स्पष्ट है कि वर्तमान परिवेश में वृद्धजन (पुरूष व महिलाएं) विभिन्न प्रकार की अनेकों समस्याओं (सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिकः चिकित्सा व स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि) से ग्रसित हैं। कई वयोवृद्धों ने तो घर परिवार छोड़कर वृद्धाश्रमों में जाकर शरण लेने की मंशा भी व्यक्त की हैं जो एक अत्यन्त दुखद पहलू है।

प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

(1) आधुनिक परिवर्तनों के कारण वृद्धजनों में परिवार के साथ सामंजस्य करने का नितान्त अभाव पाया जाता है।

(2) वृद्धजनों को परिजन भार समझकर उनके साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते हैं तथा उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(3) वृद्धावस्था में चिडचिढापन, आलस्य, एकान्त प्रियता तथा निराशा आ जाती है।

(4) मनुष्य में वृद्धावस्था में शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होने से उनके मन में चिन्ता का प्रक्रम शुरू हो जाता है।

(5) परिजन; अपने वृद्धजनों के लम्बे अनुभवों का लाभ लेना नहीं चाहते हैं।

(6) अधिक उम्र के वृद्धजन सामाजिक जीवन में दबाव एवं स्वयं को उपेक्षित अनुभव करते हैं।

(7) आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति तथा तेजी के साथ बदलता सामाजिक पर्यावरण वृद्धजनों के लिए समस्याएं उत्पन्न कर रहे हैं।

(8) बढती हुई संचार क्रान्ति एवं सामाजिक गतिशीलता; वृद्धजनों की उपेक्षा के लिए एक प्रभावी कारक है। आधुनिक परिवर्तनों के कारण वृद्धजनों में परिवार के साथ सामंजस्य करने का नितान्त अभाव पाया जाता है।

संदर्भः

मिश्रा के. एस.; ब्यवहारिक समाजशास्त्र : समस्याएं एवं सामाजिक विधान, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ (उ.प्र.) 2010, पृष्ठ–132

लवानियां एस.एम.; भारतीय सामाजिक समस्याएं, कृष्णा बुक स्टोर प्रकाशन शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) 2007 पृष्ठ–203

सारस्वत रमेश पी.; भारतीय सामाजिक ब्यवस्था; भदौरिया पब्लिकेसन्स एण्ड बुक सेन्टर (प्रा.लि.) इटावा (उ.प्र.), 2013, पृष्ठ–157

रयूटर एम.आर. एण्ड हर्ट पी.आर.; ऐन इन्ट्रोडक्शन टू सोसियोलॉजी, मैक ग्रो हिल बुक कम्पनी कोगाकुशा, न्यूयार्क, 2000, पृष्ठ–320

मिश्रा पी.के.; मानव समाज की रूपरेखा, विकास पब्लिकेसन्स, जवाहर नगर, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ–37

श्रीवास्तव हर प्रकाश; श्रमिकों में सामाजिक–ब्यावसायिक गतिशीलता के विविध आयाम, स्टरलिंग प्रकाशन (प्रा.लि.) नई दिल्ली, 2010–91, पृष्ठ–13

अग्रवाल भरत; भारतीय समाज : अतीत से वर्तमान तक, मनमोहन दास पुस्तक मन्दिर (प्रा.लि.) भरतपुर (राजस्थान), संशोधित संस्करण, 2011, पृष्ठ–103

सत्येन्द्र के. एण्ड भटनागर पी.के. ; रिसर्च डिजायन इन सोसल साइन्सेज : सोसल कण्डिसन्स एण्ड प्रॉबलम्स ; जगन्नाथ पब्लिसर्स (प्रा.लि.) दरभंगा (बिहार) द्वितीय संस्करण, 2012, पृष्ठ–89

सिन्हा ए.के.; ए स्टडी आफ द रूरल कल्चर, इण्डियन जर्नल आफ रूरल सोसियोलॉजी, वाल्यूम–29 अंक–43, दिसम्बर 2014, पृष्ठ–43

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies